1.3 ज्योतिषशास्त्र के पञ्चविध भेद

- **सिद्धान्त** - प्राचीन काल में इसकी परिभाषा मात्र सिद्धान्त गणित मानी गई थी परन्तु कालान्तर में यह सिद्धान्त विस्तृत हुआ है और गणित के सिद्धान्त, तन्त्र व करण तीन भेद हो गये।[35] भास्कराचार्य के अनुसार सिद्धान्त उसको कहते है जिसमें त्रुटि से लेकर कला के अन्त तक के काल की गणना हो जिसमें सौर, सावन, चन्द्र, नक्षत्र और मानों के भेद प्रतिपादित हो और ग्रहों की गति, स्थिति, विविध प्रकार के यन्त्रों का वर्णन प्रतिपादित हो।[36] इस प्रकार सिद्धान्त में अव्यक्त गणित अर्थात् जिसे मानव द्वारा नापा नहीं जा सकता और व्यक्त गणित जिसे कल्प, युग, वर्ष, मास, पक्ष, सप्ताह, दिन, घंटे, मिनट सैकण्ड आदि में विभाजित करके जाना जा सकता है।[37] ज्योतिष में संहिता एवं होरा स्कन्ध पूर्णतः सिद्धान्त पर निर्भर है क्योंकि गणित द्वारा ही ग्रहों की स्थिति आदि का विचार किया जा सकता है।

- **संहिता** - संहिता शब्द 'संहित' धातु व टाप् प्रत्यय से बना है जिसका अर्थ है "सुव्यवस्थित क्रम से किया गया संग्रह।"[38] संहिता ज्योतिष स्कन्ध में ग्रहसंचारवश शुभाशुभ विचार, उदयास्त का फल, वृष्टि विचार,

Scanned with CamScanner

सन्ध्यालक्षण, भूशोधन, भूकम्प, उल्का, वास्तुविचार, सामुद्रिक, गृहप्रवेश, गेहारम्भ, जलाशय निर्माण, काक, श्वान, अश्व, गेज इत्यादि की चेष्टाओं से भावी शुभाशुभ का ज्ञान, मांगलिक कार्यों के मुहुर्त्त आदि का निरुपण किया जाता है।[39] राष्ट्रविषयक शुभाशुभ का प्रतिपादन करना संहिता का प्रमुख विषय है। किन-किन ग्रह नक्षत्रों के योग विशेष से राष्ट्र पर क्या प्रभाव पड़ेगा इसका वर्णन संहिता ग्रन्थों में प्राप्त होता है। ग्रहों की तात्कालिक स्थिति से सुर्भिक्ष-दुर्भिक्ष, लाभ-हानि आदि राष्ट्र विषयक शुभाशुभ फलों का निर्देश संहिता के द्वारा ही किया जाता है।[40] लोक कल्याण की दृष्टि से संहिता के विषय अधिकाधिक महत्वपूर्ण हैं।

- होरा - होरा ज्योतिष को फलित ज्योतिष या जातक शास्त्र भी कहते है।[41] इसकी उत्पत्ति 'अहोरात्र' शब्द से हुई है। आदि 'अ' और अन्तिम 'त्र' का लोप करने से होरा शब्द बनता है।[42] होरा का अर्थ है- समय, दिन व रात्रि के समय को अहोरात्र कहते है। 24 घंटे का एक दिन और एक रात होती है और इस प्रकार एक अहोरात्र में 24 होरा होती है। भारतीय काल गणना का आधार होरा है। जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति के अनुसार व्यक्ति के लिए फलाफल का निरुपण, मानव जीवन के सुख-दुख, इष्ट-अनिष्ट, उन्नति-अवनति भाग्योदय आदि का शुभाशुभ वर्णन इस शास्त्र में वर्णित है।

Scanned with CamScanner